IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

उत्तराखंड की जनजातियों का अध्ययन

शालिनी
शोधार्थी
ओ पी जे एस विश्वविद्यालय चूरू राजस्थान

डॉ अमित
सहायक प्राध्यापक
ओ पी जे एस विश्वविद्यालय चूरू राजस्थान

सार

उत्तराखंड में मुख्यतः पाँच जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमें थारू, जौनसारी, बक्सा, भाटिया, राजी। इस पर प्रकाश डाला गया है। जिसे इस शोध पत्र में दिखाया गया है। अपनी रचनात्मक कला, शैक्षणिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करते हुए, उत्तराखंड की जनजातियों ने अपनी सदियों पुरानी पारंपरिक जीवन शैली को बरकरार रखा है। वे आदिम जीवन की विशिष्ट संस्कृति और लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पारंपरिक मानदंड और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाएं उनकी जातीयता निर्धारित करती हैं।

मुख्य शब्द: जनजातियां , भोटिया, बोक्सा.

प्रस्तावना

भारत के उत्तराखंड राज्य में मुख्य रूप से जौनसारी, था:, भोटिया, बोक्सा एवं राजी, राठी आदि जनजाति निवास करती है। जिन्हें 1967 से अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया था । भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजाति से संबंधित है। राज्य की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति थारू है राज्य की सबसे कम जनसंख्या वाली जनजाति राजी है राज्य में अनुसूचित जनजातियों को 4 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है अनुसूचित जनजातियों की सबसे अधिक आबादी वाला जिला ऊधम सिंह नगर है , तत्पश्चात देहरादून का द्वितीय स्थान है भगवान बिरसा मुंडा की 146 वीं जयंती के अवसर पर, राज्य जनजातीय अनुसंधान सह–सांस्कृतिक केंद्र और संग्रहालय (टी.आर.आई.) ने जनजातीय मामलों के मंत्रालय के सहयोग से 11 नवंबर से 13 नवंबर 2021 तक उत्तराखंड जनजातीय महोत्सव का आयोजन किया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव। जीवंत उत्सव में बड़ी संख्या में आगंतुक आए जिन्होंने स्थानीय कला और शिल्प प्रदर्शनी में भाग लिया और उत्तराखंड, झारखंड, उड़ीसा, मणिपुर, उत्तर प्रदेश के आदिवासी समुदायों और लगभग 15 राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों के उल्लेखनीय कलाकारों और शिल्पकारों की आकर्षक और उत्साही भागीदारी का स्वागत किया। भारत की। अपनी रचनात्मक कला, शैक्षणिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करते हुए, उत्तराखंड के एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (ईएमआरएस) के छात्रों ने भी उत्सव में उत्साहपूर्वक भाग लिया। नागालैंड, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, सिक्किम, राजस्थान, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश,

पंजाब, उत्तराखंड और अन्य राज्यों के कारीगरों और शिल्पकारों ने बिक्री के लिए स्वदेशी हस्तनिर्मित उत्पादों का प्रदर्शन किया।

उन्होंने विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प, आभूषण, शीतकालीन वस्त्र संग्रह, आदिवासी संलयन फैशन, पेंटिंग, कालीन, पारंपरिक दवाएं और बहुत कुछ प्रदर्शित किया। ऐपन पेंटिंग और पॉटरी मेकिंग जैसी जीवंत गतिविधियां भी आयोजित की गईं और प्रतिभागियों को जलपान वितरित किया गया। उत्तराखंड राज्य को देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है जो अपनी अद्भुत संस्कृति और परंपरा के लिए प्रसिद्ध है, जो अपने भीतर भौगोलिक और पर्वतीय विविधताओं को समाहित करता है।

जौनसार की संस्कृति और परंपरा को प्रसिद्ध बनाने में यहां रहने वाले आदिवासी समुदाय का भी विशिष्ट योगदान है जो उत्तराखंड राज्य में कई जगहों पर निवास करता है। इस जनजाति समुदाय की अपनी विशेष संस्कृति और परंपरा है। उत्तराखंड में मुख्यतः पाँच जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमें थारू, जौनसारी, बक्सा, भाटिया, राजी। इस पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृति और परंपराओं की रक्षा करने वाली जौनसारी महिलाओं की भूमिका इस समाज के लिए उनकी पहचान बन गई है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा के रूप में काम करेगी, जौनसारी समाज में पहले की तुलना में काफी बदलाव आया है। आज जौनसारी महिलाएं अपने क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा की अभिगमकर्ता हैं, इसलिए उन्हें यह विकसित करना चाहिए कि वे अपने समाज का सही तरीके से विकास कैसे कर सकते हैं और अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर सकते हैं। उत्तराखण्ड अपनी विभिन्नताओं और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है । यहाँ पर 5 प्रकार की जनजातियां पाई जाती है था: जनजाति, जौनसारी, भोटिया जनजाति, बोक्सा जनजाति, राजी जनजाति ।

उत्तराखण्ड की विभिन्न जनजातियां

- **थारू जनजाति**

यह एक जनजाति समुदाय है जो भारत के उत्तराखंड राज्य के ऊधम सिंह नगर जिले के खटीमा, किच्छा, नानकमत्ता ओर सितारगंज में निवास करते है। जनसंख्या की दृष्टि से यह उत्तराखंड व कुमाऊं क्षेत्र का सबसे बड़ा जनजाति समुदाय है। उत्तराखंड के अलावा यह उत्तर प्रदेश के लखीमपुर, गोंडा, बहराइच, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर जिलों में तथा बिहार के चंपारण तथा दरभंगा जिलों में नेपाल के पूर्व में भेंची से महाकाली नदी तक तराई क्षेत्र में रहते हैं।

परिवार सयुक्त व मातृसत्तात्मक होता है इनकी शारिरिक बनावट मंगोल प्रजाति जैसी है। इनकी जातियों मे बड़वायक, रावत, बठ्ठा, महतो आदि है।

भोजन– इनका मुख्य भोजन चावल, मछली, मांस है। इनका मुख्य पेय मदिरा है जो यह चावल से स्वय बनाते है जिसे जाड़ कहते है।

थारू जनजाति की प्रथाएँ –तीन तिकठी प्रथा, विधवा विवाह की प्रथा

त्यौहार–थारू हिन्दू धर्म को मानते है। इसलिए दशहरा, होली, दीवाली, कृष्ण अष्टमी, माघ की खिचड़ी, बजहर त्यौहार मनाते है। दीवाली दीवाली को यह शोक के पर्व के रूप में मनाते हैं

बजहर – इस त्यौहार में महिलाएं घर से बाहर निकल कर पीपल या बरगद के पेड़ के नीचे खाना बनाती हैं तथा नृत्य करती है। यह त्यौहार जेठ या वैशाख के महा में मनाया जाता है।

होली — होली फागुन पूर्णिमा से 8 दिन तक मनाया जाता है जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर खिचड़ी नृत्य करते हैं।

नृत्य गीत– झुमड़ा, सेजनी, लहचारी आदि

अर्थव्यवस्था– यह मुख्यतः कृषि एवं पशुपालन का करते है। ये मुख्य रूप से धान की खेती करते है। इसके अतिरिक्त यह टोकरी, चटाई, आदि भी बनाते है।

उद्देशय

1. उत्तराखण्ड की विभिन्न जनजातियां का अध्ययन करना।
2. जनजातियां का समाजिक ब्यवस्था, सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन का अध्ययन करना।

- **जौनसारी जनजाति**

जौनसारी जनजाति राज्य की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति समुदाय है व गढ़वाल का सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है।

उत्पति–इनकी उत्पति इंडो आर्यन परिवार से हुई।ये मंगोल प्रजाति के मिश्रित जनजाति है जौनसारी जनजाति के लोग अपने को पांडवो का वंशज मानते हैं।

निवास– दून व भाभर क्षेत्र जिसमें दून का चकराता, कालसी, लाखामण्डल टिहरी का जौनपुर क्षेत्र व उत्तरकाशी का परग नेकान क्षेत्र आता है।देहरादून का कालसी, चकराता व ल्युनी क्षेत्र को जौनसार–बाबर क्षेत्र कहते हैं 95% जौनसारी जनजाति देहरादून में निवास करती है।

भाषा– मुख्य भाषा जौनसारी लेकिन बाबर क्षेत्र में बाबरी भाषा बोली जाती है।

वेशभूषा/पहनावा– पुरूष– पुरुष सर्दियों में ऊनी कोट,ऊनी पजामा(झगोली) व ऊनी टोपी(डिगुबा) पहनते हैं व गर्मियों में कोट, सूती टोपी, पायजामा पहनते हैं महिलाएं– गर्मियो में कुर्ती पजामा(झगा), सूती घाघरा व चोली(चोल्टी) पहनते हैं व सर्दियों में ऊनी घाघरा, कुर्ता, व एक बड़ा रुमाल(ढांट)

आवास– घर लकड़ी व पत्थर के बने होते हैं

उपजातियां– जौनसारी जनजाति की निम्न उपजातियां है–.खसास– ब्राह्मण व राजपूत

.हरिजन खसास– डोम, कोली, मोची, कोल्टा .कारीगर– लोहार, सोनार, बागजी, बढ़ई

समाजिक ब्यवस्था– इनमें पितृसत्तात्मक सयुंक्त परिवार प्रथा पायी जाती है।परिवार का मुखिया घर का सबसे बड़ा पुरूष होता है

विवाह प्रथा– विवाह के पूर्व लड़की को ध्यन्ति व विवाहोपरांत रयान्ति कहा जाता है। इनमें पहले बहुपति विवाह प्रथा का प्रचलन था जो कि समाप्त हो चुकी है। इनके समाज मे कन्या पक्ष को उच्च माना जाता है।

धर्म– ये हिन्दू धर्म को मानते हैं व महाशु(महाशिव), बोठा, पवासी, चोलदा, देवी देवताओं की पूजा करते हैं महासू देवता इनके प्रमुख देवता हैं कुछ लोग महासू देवता को विष्णु का 6वं अवतार भी मानते हैं इनका प्रमुख तीर्थ स्थल हनोला है। इनके मन्दिर लकड़ी व पत्थर के बने होते हैं।

सांस्कृतिक प्रमुख त्योहार– दशहरा– पंचाई,पांचों या पांयता दीपावली– दियाई बैशाखी– विस्सू जन्माष्टमी– अठोई नुणाई, माघत्योहार, जागड़ा इनके प्रमुख त्योहार हैं। जागड़ा महासू देवता का त्योहार है। दीपावली इनका सबसे विशेष पर्व है जिसे ये राष्ट्रीय दीपावली के एक माह बाद मनाते हैं। दीपावली में ये भीमल लकड़ी का होला जलाते हैं व पांडवो व महासू देवता के गीत गाते हैं। होला को खेत में ले जाकर भयलो खेला जाता है।

दीपावली के दूसरे दिन को भीरुडी कहा जाता है इस दिन पुरूष पतेबाजी नृत्य करते हैं।

प्रमुख मेले–

1. .चोलिथात मेला– यह मेला 3 मई को वीर केसरी चंद के बलिदान दिवस पर मनाया जाता है।
2. बिस्सू मेला– यह मेला बैसाखी में लगता है व ठाणा डांडा, चोरानी मेला, नागपात, आदि स्थानों पर लगता है।
3. मछमोण मेला– इस मेले में केवल पुरूष भाग लेते हैं व नदी में तिमूर(तेजबल झाड़ी) का पाउडर डालकर मछलियों के बेहोश कर पकड़ते हैं।4.जतरियाड़ो मोण– यह मेला 25–26 सालों में एक बार लगता है।

प्रमुखनृत्य:– राँसों नृत्य, तांदी नृत्य, हारूला नृत्य(परात नृत्य), ठुमकिया नृत्य, घुमसु, झेला, पतेबाजी, रास–रासो, मंडवड़ा, सराई, जंगबाजी नृत्य आदि

अर्थव्यवस्था– कृषि एवं पशुपालन

राजनीति ब्यवस्था– खुमरी समिति– एक गांव में पहले खुमरी समिति हुआ करती थी जिसका मुखिया सयाणा हुआ करता था खत समिति– खुमरी समिति के ऊपर खत समिति होती थी जिसका मुखिया खत सयाणाहोताथा।अब इस जनजाति में भी ग्राम पंचायतें हैं।

- **बोक्सा जनजाति**

बोक्सा जनजाति उत्तराखंड के तराई भाबर क्षेत्र में स्थित उधम सिंह नगर के बाजपुर, गदरपुर, काशीपुर में इनकी संख्या अधिक है तथा नैनीताल के रामनगर, देहरादून के विकासनगर, डोईवाला, सहसपुर पौड़ी गढ़वाल के दुगड्डा विकासखंडो में भी रहते है। बुक्सा अपने को पंवार राजपूत बताते हैं। ऐसा माना जाता है कि बोक्सा सर्वप्रथम बनबसा (चंपावत) ने 16 वीं शताब्दी में आकर बसे थे। इन लोगों की कोई अपनी विशिष्ट भाषा नहीं है यह जिस क्षेत्र में निवास करते हैं वही की बोली बोलते हैं। इनमे ज्यादातर संयुक्त और विस्तृत परिवार पाए जाते हैं इनका परिवार पितृसत्तात्मक होता है धर्म से यह हिंदू धर्म के काफी निकट है यह लोग महादेव काली दुर्गा लक्ष्मी रामकृष्ण आदि स्थानीय देवी देवताओं की पूजा भी करते हैं। इनका प्रमुख भोजन मछली और चावल है। पहले इनका आर्थिक जीवन जंगल की लकड़ियां, फल–फूल, शहद, जानवरों के शिकार, मछली पर आधारित था लेकिन अब कृषि पशुपालन दस्तकारी इनके आर्थिक जीवन का मुख्य आधार है।

- **भोटिया जनजाति**

किरात वंशीय भोटिया एक अर्द्ध घुमन्तू जनजाति है। ये अपने को खश राजपूत कहते है। यह पिथौरागढ़, चमोली, अल्मोड़ा, उत्तरकाशी जिलों के उत्तरी भागों में स्थित भागीरथी नदी, विष्णु गंगा नदी, नीति, व्यास, जोहार आदि बृहद हिमालय के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में स्थित स्थान पर निवास करते हैं। कश्मीर में भोटा व हिमाचल प्रदेश में भोट तथा उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के तिब्बत व नेपाल से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में इन्हें भोटिया कहा जाता है। इसकी उपजाति मारछा, जोहारी, शौका, दरमिया, चोंदासी, व्यासी, जाड़, जेठरा

भोजन– भोजन में छाकू (भात), छामा (दाल, साग), कुटो (रोटी) प्रमुख है। पेय पदार्थ ये ज्या प्रमुख है। ये शराब को च्याकती या छंग कहते है। शारीरिक संरचना तिब्बती एवं मंगोलियन जाति का मिश्रण है।

सामाजिक व्यवस्था– इस जनजाति में पितृसत्तात्मक प्रकार का परिवार पाया जाता है। इसमें एक पत्नी प्रथा प्रचलित है।

सांस्कृतिक उत्सव– इस समाज में मृतकों की आत्मा की शांति के लिए ग्वन संस्कार किया जाता है। ये जनजाति प्रत्येक 12 वें वर्ष में कंडाली नामक उत्सव मनाया जाता है। इनका वाद्य यंत्र हुड़के को बजाते है।

अर्थव्यवस्था– इस जनजाति का आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, व्यापार व ऊनी दस्तकरी पर आधारित है । यह सीढ़ीनुमा खेती करते हैं। यहां झूम की प्रणाली की तरह काटिल विधि से वनों में आग लगाकर साफ करके खेती करने करते है।

- **जाड़ जनजाति**

जाड़ जनजाति उत्तरकाशी जनपद में भागीरथी की ऊपरी घाटी में रहने वाली सीमान्त क्षेत्र की जनजाति है । इसका मूल गाँव भारत – तिब्बत सीमावर्ती ग्राम जाटुंग है । ये लोग अपने को राजा जनक के वंशज मानते हैं तथा मूल रूप से बौद्धधर्म के अनुयायी होते हैं ।

वेशभूषा

जाड जनजाति के पुरुष घुटनों से थोड़ा ऊँचा गर्म चोगा पहनते हैं , जिसे श वपकन कहा जाता है । घुटनों से नीचे ऊनी धारीदार एवं चूड़ीदार पाजामा पहनते हैं । सिर पर हिमाचली टोपी तथा पैरों में खाल से निर्मित जूता पहना जाता है , जिसे पैन्तुराण कहते हैं । जाड़ स्त्रियाँ पैरों तक (कौलक) लंबा चोगा पहनती हैं ।

समाजिक स्थिति

इस जनजाति समाज में आधुनिकता का कम प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । इनमें विघटित परिवार व्यवस्था पाई जाती है , जिसमें पुत्रों के वयस्क हो जाने पर उन्हें परिवार से अलग कर दिया जाता है । पिता की संपत्ति में पुत्रों एवं पुत्रियों का समान अधिकार होता है । इस जनजाति के साँस्कृतिक सम्बन्ध तिब्बत से रहे हैं । अत रू आज भी इनमें श्रेष्ठ ब्राह्मण का कार्य करने वाला श लामा श ही कहा जाता है । वर्तमान समय में ये लोग बौद्ध संस्कृति के साथ – साथ हिंदू संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं । ये जनजाति समुदाय सामाजिक तौर पर 3 वर्गों में विभाजित है

सांस्कृतिक स्थिति

इनमें कलात्मक अभिरुचि विशेष रूप से पाई जाती है । इनकी भवन निर्माण कला , चित्रकारी आदि के उत्कृष्ट नमूने इनके मूल ग्रामों – बगोरी , नेलंग आदि में देखे जा सकते हैं । जाड स्त्रियाँ सामाजिक , साँस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं । यह घरेलू उद्योग – धंधों और व्यापार में पुरुषों की तरह कार्य करती हैं । वे बहुत परिश्रमी होती हैं तथा ऊनी वस्त्र जैसे पटू , थुलमा , टूमकर , पंखी , फाँचा , आँगड़ा आदि अत्यंत कलात्मक ढंग से बनाती हैं। जाड जनजाति के वर्षभर में केवल दो ही त्योहार होते हैं । ' लौहसर ' का त्योहार वसंत पंचमी के दिन मनाया जाता है । इसे इनके वर्ष का पहला दिन माना जाता है । इनका दूसरा प्रमुख त्योहार ' शूरगैन ' है , जो भाद्र माह के बीसवें दिन से प्रारम्भ होता है। इनकी भाषा को ' रोम्बा ' कहा जाता है । रोम्बा भाषा गढ़वाली भाषा की अपेक्षा तिब्बती भाषा से मिलती – जुलती हैं ।

उपसंहार

हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है। उत्तराखंड राज्य में, आदिवासी आबादी का मुख्य केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में है। रिकॉर्ड के अनुसार, कुल आदिवासी आबादी का लगभग 94.50 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है और शेष प्रतिशत जनजातीय आबादी शहरी केंद्रों में रहती है। उत्तराखंड की इन जनजातियों को भारत के संविधान में अनुसूचित किया गया है। ऐतिहासिक रिकॉर्ड बताते हैं कि उत्तराखंड की जनजातियाँ उत्तर भारत के इस क्षेत्र के शुरुआती निवासी हैं। अतीत में, उनकी मुख्य सांद्रता दूरस्थ पहाड़ी और वन क्षेत्रों तक ही सीमित थी। उत्तराखंड की जनजातियों ने अपनी सदियों पुरानी पारंपरिक जीवन शैली को बरकरार रखा है ।वे आदिम जीवन की विशिष्ट संस्कृति और लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पारंपरिक मानदंड और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाएं उनकी जातीयता निर्धारित करती हैं। आधिकारिक तौर पर उत्तराखंड पांच जनजातियों का घर है, जिन्हें भारत के संविधान में निर्धारित किया गया है ।

संदर्भ सूचि

[1]. बिष्ट, बी.एस., (2019). ‘‘शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण का एक अध्ययन: उत्तरांचल की जनजाति,’’ नई दिल्ली कल्पाज प्रकाशन।

[2]. आदिम जाति कल्याण निदेशालय, आदिम के लिए संरक्षण–सह–विकास योजना। 11वीं पंचवर्षीय योजना के लिए जनजातीय समूह (अवधि 2009–12), देहरादून, उत्तराखंड।

[3]. पांगटे वाईपीएस, सामंत एसएस, रावत जी.एस. (1989). ‘‘कुमाऊं हिमालय के भोटिया’’ पर एथनोबोटैनिकल नोट्स, भारतीय जे वानिकी।

[4]. महावीर सिंह (2017) नीति–माना गांव की भोटिया जनजाति के बीच सांस्कृतिक गिरावट, चमोली (यूके) प्रस्ताव 2015–2017.

[5]. मोहंती, बी.बी. (2009) 'बोंडो', के.के. मोहंती और जे. दास (सं.). आदिवासी सीमा शुल्क और परंपराएं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, कटकरू उड़ीसा सरकार। प्रेस।

[6]. ओटा, ए.बी. और शरत सी. मोहंती, (2008), 'बोंडा', भुवनेश्वररू अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (बेजतजप.पद)।

[7]. निशांत सक्सेना (2018) "उत्तराखंड का बुक्सा" इस प्रकाशन के लिए चर्चा, आंकड़े और लेखक प्रोफाइल यहां देखें: https:@@www-researchgate-net@publication/304019805.

[8]. उत्तरांचल बहू–उददेसिया विट्टा एवं विकास निगम लिमिटेड, समाज कल्याण मंत्रालय, उत्तराखंड सरकार, 2006 द्वारा बेस लाइन सर्वेक्षण।

[9]. नाथन, देव (2017) जनजाति से जाति के लिए भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान। पीपी31–81.